IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

आशा सक्सेना

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

एवं

डॉ. शालिनी पाण्डेय

प्राचार्या, उदय शिक्षा समिति, पचेरा, जिला भिण्ड (म.प्र.)

सार

किशोरावस्था बालक के जीवन का स्वर्ण काल है, जिस समय वह अपनी शारीरिक क्षमताओं एवं योग्यताओं के द्वारा नये–नये अनुभव प्राप्त करता है। ये अनुभव एक ओर उसमें आत्मविश्वास एवं संतोष का विकास करते हैं तथा दूसरी ओर उसकी शैक्षिक व शैक्षणोत्तर गतिविधियाँ उसे भावी जीवन के लिए तैयार करती हैं। यदि बालक सांवेगिक रूप से परिपक्व है तो वह अपने जीवन में उतार–चढ़ावों को आसानी से पार कर लेता है। परन्तु शिक्षा के विभिन्न सकांय के विद्यार्थियों के मानसिक सवेंग भिन्न–भिन्न होते हैं। शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस हेतु मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 60 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। छात्र–छात्राओं की सावेंगिक परिपक्वता का अध्ययन करने के लिए तारा सबपथी (2017) द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया तथा शोध के निष्कर्ष में पाया गया है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

मुख्य शब्द : वाणिज्य वर्ग, सवेंगात्मक परिपक्वता

प्रस्तावना : बालक की शैक्षिक गतिविधियों की कार्यप्रणाली में उसकी मानसिक अवस्था एवं स्वस्थ जीवन का अत्यधिक योगदान होता है। वास्तव में मानव के विकास के इतिहास में शिक्षण एक महत्वपूर्ण स्थान

रखता है। मानव ने अपने और दूसरे प्राणियों के बीच में यह अन्तर पाया कि उनका सीखना स्वतः चलता रहता है, जबकि मानव को सीखने के लिए शिक्षण की आवश्यकता होती है। सवेंगात्मक परिपक्वता एक सुखी एवं संतुष्ट जीवन जीने का आधार कहा जाता है। अगर किसी व्यक्ति के जीवन में संवेगात्मक परिपक्वता नहीं है तो उसका जीवन एक दुखद प्रसंग बनकर रह जाता है। यह एक वह प्रक्रिया है जिसके लिये व्यक्ति सतत् प्रयासरत् रहता है ताकि सवेंगात्मक स्वास्थ्य प्राप्त कर सके। वर्तमान परिस्थितियों में युवा एवं किशोर विद्यार्थी जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं इन कठिनाइयों के कारण उनमें अनेक मनोदैहिक बिमारियाँ जैसे घबराहट, तनाव, चिन्ता, निराशा, आत्महत्या एवं अवसाद संवेगात्मक परेशानियाँ उत्पन्न हो रही है। इन सब तथ्यों को जानने हेतु शोधार्थी ने ''शासकीय एव ं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन'' कर देखना चाहा कि वाणिज्य सकांय के विद्यार्थियों पर सांवेगिक परिपक्वता का क्या प्रभाव पडता है यह जानने हेतु प्रस्तुत शोध पत्र के लिए इस समस्या का चयन किया गया है।

सवेंगात्मक परिपक्वता प्रत्येक आयु वर्ग के लिए महत्वपर्णू है क्योंकि बच्चों के साथ व्यवहार के लिए परिपक्वता की आवश्यकता होती है बच्चे कुछ अनैतिक मूल्यों लिप्त हो जाते हैं परन्तु ऐसे कार्यो में वे अपरिपक्वता के कारण चले जाते हैं हम अभिभावक होने के नाते अपने बच्चों से ठीक कार्य करने हेतु अनैतिक कार्य न करने की अपेक्षा रखते हैं। ऐसा देखा गया है कि कुछ बच्चे सामाजिक रूप से विकसित नहीं होते इसलिए प्रसिद्धि प्राप्त सगंठन उनका तिरस्कार कर देते है यहीं नहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति व अध्यापक भी उनका तिरस्कार कर देते है इसलिए ऐसे छात्र अन्य तिरस्कृत कमजोर छात्रों से दोस्ती कर लेते हैं रोब जमाने या घृणास्पद व्यवहार विद्यार्थी की सीखने की प्रवृति को क्षीण करती हैं।

शोध उद्देश्य :

1. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

2. शासकीय एव ं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि

अनुसंधान में प्रयुक्त समस्या की स्पष्ट व्याख्या हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श :

शोधार्थी द्वारा मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर के 2 शासकीय एवं 2 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 60 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

शोध उपकरण – प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी द्वारा छात्र–छात्राओं की सावेंगिक परिपक्वता का अध्ययन करने के लिए तारा सबपथी (2017) द्वारा निर्मित सवेंगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया।

समस्या का सीमांकन – प्रस्तुत शोध मध्यप्रदेश के ग्वालियर नगर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

शोधार्थी द्वारा शोध में प्रयुक्त समस्या कथन की आवश्यकता अनुसार निम्नलिखित सत्रों का प्रयोग किया गया है–

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–मान

प्रदत्तों का विश्लेषण :

परिकल्पना : 1

शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्रों की सवेंगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 1

शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
शासकीय विद्यालय के वाणिज्य के छात्र	129.40	10.08	58	1.57
अशासकीय विद्यालय के वाणिज्य के छात्र	124.90	12.03		

58 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 1.57 इन दोनों मानों से कम है अतः सार्थक नहीं है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो ंके वाणिज्य वर्ग के छात्रों की सवेंगात्मक परिपक्वता मे ं कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना : 2

शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो ं की वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की सवेंगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका 2

शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

समूह	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	टी–मान
शासकीय विद्यालय की वाणिज्य की छात्रायें	128.63	10.63	58	1.01

अशासकीय विद्यालय की वाणिज्य की छात्रायें	125.83	10.89		

58 df पर t का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त t का मान 1.01 इन दोनों मानों से कम है अतः सार्थक नहीं है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की वाणिज्य वर्ग की छात्राओं की संवेंगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष : प्रथम एवं द्वितीय परिकल्पनाओं के विश्लेषण के पश्चात् ज्ञात होता है कि वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं के परिवार का गृह वातावरण, इन परिवारों के पोषित बालक बालिकाओं के बौद्धिक क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। साथ ही विद्यालय के वातावरण जैसे अभिभावक–शिक्षक

सबंध, शिक्षण अभ्यास, कक्षा शैक्षिक प्रकिया का प्रभाव भी समान पडता है। सभंवतः दोनों ही समूह को लगभग एक समान वातावरण उपलब्ध होने के कारण, दोनों समूह की सवेंगात्मक परिपक्वता एक समान २ष्टिगोचर हो रही है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के वाणिज्य वर्ग के छात्र–छात्राओं की सवें`गात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर दृष्टिगोचर नहीं होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- भटनागर, सुरेश (1991). ''शिक्षा मनोविज्ञान'', अटलान्टिक पब्लिशर्स, दिल्ली।
- चौहान, ए. एस. (2006). ''एडवांस एजूकेशनल साइक्लोजी'', विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
- चतुर्वेदी, अमित कुमारी रीना (2012); ''रोल ऑफ इमोशनल मैचुरिटी एण्ड इमोशनल इन्टेलीजेसं इन लर्गिग एण्ड एचीवमेन्ट इन सांइस कन्टेस्ट'', इण्टरनेशनल ऑफ एजूकेशन, शैक्षिक परिसंवाद।
- पचौरी, प्रो. गिरीश एवं अग्रवाल, प्रीति (2016): ''बाल्यावस्था और विकास'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।